SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हसरत मोहानीः स्वदेशी और विदेशी बहिष्कार के अग्रदूत

नज़राना परवीन, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नज़राना परवीन, शोधार्थी
E-mail : naaz661996@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/05/2025
Revised on : 14/07/2025
Accepted on : 23/07/2025
Overall Similarity : 00% on 15/07/2025

शोध सार

सय्यद फजल–उल–हसन, जिन्हें हसरत मोहानी के नाम से जाना जाता है, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हसरत एक महान पत्रकार, संपादक, लोकप्रिय शायर, कवि, राष्ट्रवादी एवं साम्यवादी विचारक, पूर्ण स्वाधीनता के पक्षधरे, साथ–ही–साथ स्वदेशी प्रचलन और विदेशी बहिष्कार के प्रबल समर्थक थे। महात्मा गांधी हसरत की स्वदेशी के प्रति प्रेम से प्रभावित थे। हसरत ने स्वदेशी का खूब प्रचार–प्रसार किया। अपनी पत्नी निशातुन निशा बेगम के साथ मिलकर अलीगढ़ के रसेलगंज में स्वदेश स्टोर खोला। हसरत स्वदेशी प्रचलन और विदेशी बहिष्कार को एक दूसरे का पूरक माना और इन दोनों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। हसरत का नजरिया अन्य नेताओं से कुछ अलग था। उसके अनुसार स्वदेशी का मतलब देश में निर्मित किसी भी चीज से है। अन्य नेताओं के विपरीत उनका मानना था कि भारतीय मिल निर्मित कपड़ा उतना ही स्वदेशी है जितना खादर एवं हाथ से बुने हुए कपड़े। उनके विचार में स्वदेशी श्रम और सामग्री के साथ उत्पादित सामान स्वदेशी थे, भले ही उनके निर्माण के पीछे विदेशी वित्त था। उनके विचार में स्वदेशी आंदोलन तभी सफल हो सकता है जब विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया जाए।

मुख्य शब्द

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, राष्ट्रवादी, साम्यवादी, स्वदेशी, बहिष्कार.

भूमिका

''इंकलाब जिंदाबाद'' का नारा रचने वाले मौलाना हसरत मोहानी एक प्रतिष्ठित स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी मुस्लिम, उर्दू भाषा के रोमानी (रोमांटिक) कवि, एक

सांसद और 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस फोरम से अंग्रेजों से ''पूर्ण स्वतंत्रता'' की मांग करने वाले पहले कार्यकर्ता थे। हसरत मोहानी एक राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का प्रबल समर्थन किया। उन्होंने ना केवल स्वदेशी को समर्थन किया बल्कि अपने जीवन में उतारा भी। ''एक बार हसरत अपने दोस्त के घर ठहरे। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। उनके दोस्त में उन्हें एक कीमती कंबल ओढ़ने के लिए दिया जिस पर मेड इन इंग्लैंड लिखा हुआ था। हसरत रात भर कड़ाके की ठंड में कांपते रहे पर उन्होंने उस कंबल का उपयोग नहीं किया''।[1]

हसरत मोहानी का स्वदेशी और विदेशी बहिष्कार संबंधित विचार

हसरत मोहानी स्वदेशी वस्तुओ के प्रबल समर्थक थे। बंगाल विभाजन के उपरांत सरकार को कमजोर करने और जनता को उसकी उपयोगिता के प्रति जागृत करने के लिए पूरे देश में गांधी जी द्वारा स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ किया गया। हसरत मोहानी ने इसमें बढ़– चढ़कर हिस्सा लिया। 1905 ई. में बनारस में अखिल भारतीय औद्योगिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने के बाद वो स्वदेशी विचारधारा के कट्टर समर्थक बन गए। इस संबंध में उन्होंने अपनी पत्रिका ''उर्दू–ए–मुअल्ला'' में एक लेख प्रकाशित किया। उन्होंने देशवासियों से ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का आग्रह किया। हसरत चाहते थे कि सभी देशवासी मिलकर इस आंदोलन को सफल बनाए।

आरिफ हसवी अपने एक लेख ''स्वदेशी आंदोलन और हसरत मोहनी'' में लिखते हैं ''मौलाना हसरत मोहानी शुरु से ही स्वदेशी आंदोलन के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने हमेशा इस आंदोलन को प्रचारित करने की पूरी कोशिश की और स्वदेशी आंदोलन को आर्थिक विकास का एक मात्र साधन माना। सभी भारतीयों के बीच इसे लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया। उनका पहला कदम आयातीत सामानों का बहिष्कार करना था। उन्होंने अपने पत्र में लेख लिखें और इस आंदोलन के प्रचार के लिए अपनी सारी ऊर्जा लगा दी। वे मुसलमानों के बीच अधिक सफल थे जो उनके लेखन से प्रभावित थे। नतीजतन लोगों की एक बड़ी संख्या ने विदेशी वस्तुओं का उपयोग छोड़ दिया। हालाकि हसरत जो कर रहा था उससे संतुष्ट नहीं था। वह कुछ और करना चाहता था। इसलिए उसने स्वदेशी स्टोर शुरु किया अलीगढ़ के रसेलगंज में''।[2]

हसरत का स्वदेशी के संबंध में अन्य कांग्रेसी नेताओं से मतभेद

हसरत मोहानी कांग्रेस के गरम दल से संबंध रखते थे। उन्होंने नरम दल की नीतियों का और विचारों का विरोध किया। उन्होंने उर्दू–ए–मुअल्ला में ''फारिक–ए–नरम की बाज गलत–फहमियां'' (Farisha-i-Narm ki b'az ghalat Fahmiya) (नरम दल की गलतफहमियां) शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने नरम दल की आदर्शवादी गतिविधियों की आलोचना कि उन्होंने कहा राष्ट्रवाद और पूर्ण स्वतंत्रता स्वाधीनता की भावना हमारे युवाओं के दिलों दिमाग में पैदा हो चुकी हैं। उदारवादीयो के आदर्शवादी विचार पुराने कलेंडर की भांति है।

कांग्रेस के उदारवादी नेता मोतीलाल नेहरु हसरत से सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा कि अंग्रेज स्वदेशी आंदोलन के खिलाफ नहीं है, और यहां तक कि वायसराय लॉर्ड कर्जन ने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया, और इसे हर तरह की मदद का वादा किया। हसरत ने इस विचार को खारिज करते हुए कहा कि यह सोचना मूर्खता है कि ब्रिटिश अपने देश में तैयार की जाने वाली चीजो के बदले भारतीय स्वदेशी वस्तुओं को प्रमुखता देंगे। ब्रिटिश स्वयं उन चीजों का निर्माण कर रहे है। वे स्वदेशी आंदोलन का समर्थन कैसे कर सकते है? उन्होंने ऐसे सभी विचारों को बेतुका बताया।[3]

हसरत ने स्वदेशी समर्थन और विदेशी बहिष्कार को एक दूसरे का पूरक माना। उसके लिए स्वदेशी का मतलब था ''लोग अपने देश के लोगों के उपयोग के लिए अपनी खुद की वस्तुओं का निर्माण करें।'' हसरत में उदारवादियों के इस विचार को सिरे से नकार दिया कि सरकार स्वदेशी आंदोलन में अपना समर्थन देगी और ब्रिटिश वस्तु के बहिष्कार का स्वागत करेगी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा की ''ब्रिटिश सामानों का कोई भी विरोध भारतीयों को देशद्रोही साबित करेगा और सरकार ऐसे आंदोलन के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगी। अंग्रेज कभी भी स्वदेशी आंदोलन को बर्दाश्त नहीं करेंगे और हमें इस संबंध में उनकी ओर से सहानुभूति के उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।''4

हसरत का विचार सही साबित हुए जब सर रोपर बेट्रिज ने बयान दिया ''इंग्लैंड से प्यार करने वाला कोई भी अंग्रेज कभी नहीं चाहेगा की भारतीय स्वदेशी आंदोलन सफल हो क्योंकि स्वदेशी का मतलब है कि ब्रिटिश उद्योगों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए कि इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के कारीगरों को भुखमरी का सामना करना पड़ेगा और पूरे ब्रिटिश व्यापार को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया जाना चाहिए''।[5]

स्वदेशी के बारे में हसरत का नजरिया कुछ अलग था। उनके अनुसार स्वदेशी का मतलब देश में निर्मित किसी भी चीज से है। अन्य नेताओं के विपरीत उनका मानना था कि भारतीय मिल निर्मित कपड़ा उतना ही स्वदेशी है जितना खादर एवं हाथ से बुने हुए कपड़े। उनके विचार में स्वदेशी श्रम और सामग्री के साथ उत्पादित सामान स्वदेशी थे, भले ही उनके निर्माण के पीछे विदेशी वित्त था। इस विचार को अमल में लाने के लिए उर्दू–ए–मुअल्ला के नवंबर 1909 के अंक मे पूरे पृष्ठ पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया। हसरत का यह कदम उनके राष्ट्रवादी विचारों के लिए प्रश्नचिंह लगाता है पर वास्तव में यह विज्ञापन उनके रुख का स्पष्ट प्रमाण था। विज्ञापन की पहली पंक्ति थी– ''उच्च गुणवत्ता वाले पैडलॉक बेहद मजबूत और टिकाऊ होते हैं और अंग्रेजों के महंगे पैड लॉक के बराबर होते है..''।[6]

आगे के दिनों में हसरत में स्वदेशी अपनाने तथा विदेशी बहिष्कार के संदेश को फैलाने और लोगों को जागरुक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खासतौर पर मुसलमानों को स्वदेशी के महत्त्व को समझाने में सराहनिय प्रयास किया इसके लिए उन्होंने हिंदू–मुस्लिम दोनों के धार्मिक नेताओं से अनुमोदन प्राप्त किया। उर्दू–ए–मुअल्ला के अप्रैल 1913 के अंक में उन्होंने पवित्र कुरान और हदीस के प्रकाश में तर्क देकर कहां की विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन इस्लाम के इतिहास से संबंध रखता है। आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों की यात्राएं की। उन्होंने बरेली, मुरादाबाद, मेरठ, देवबंद, सहारनपुर, हरिद्वार, लाहौर, अमृतसर, और लुधियाना का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अनेक लोगों से संपर्क किया और उन्हें इस आंदोलन में आगे आने के लिए प्रेरित किया।

हसरत का स्वदेशी स्टोर

इसी अवधि के दौरान हसरत मोहानी ने अलीगढ़ के रसेलगंज में अपनी पत्नी निशातुन निशान बेगम के साथ मिलकर ''मोहानी स्वदेशी स्टोर'' की स्थापना की। उनके पास स्टोर खोलने के लिए संसाधन का अभाव था। ऐसा कहा जाता है कि मौलाना शिवली नोमानी ने सर फजलभोय से उनकी सिफारिश की थी। फजलभोय मुंबई के व्यापारी थे जिन्होंने हसरत को क्रेडिट पर माल दिया।

हसरत मोहानी कि साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों से शिवली नोमानी इतने ज्यादा प्रभावित हुए कि इस अवसर पर उन्होंने कहा ''तुम आदमी हो या जिन्न? पहले शायर थे, फिर पॉलिटिशियन बन गए अब बनिए भी बन गए हो....''। प्रसिद्ध उर्दू कवि अकबर इलाहाबादी ने भी इस अवसर पर अलीगढ़ में स्वदेश स्टोर स्थापित करने के लिए हसरत के इस कदम की प्रशंसा की।

हसरत केवल अपना स्वदेशी स्टोर स्थापित करने से संतुष्ट नहीं हुए। बह पूरे देश में इस दुकान का जाल देखना चाहते थे। उर्दू–ए–मुअल्ला के एक लेख में उन्होंने लिखा इस तरह की दुकानें यूपी के हर एक शहर और बड़े–बड़े शहरों में और अहमदाबाद, बंबई, नागपुर, कानपुर और अन्य जगह पर भी खोलने की कोशिश की जा रही है।

हसरत मोहानी के स्वदेशी समर्थक लेखो ने अंग्रेजो की नींद छीन ली। उन्हें देशद्रोही करार दिया गया और उन पर जुर्माना लगा कर प्रेस को बंद कर दिया गया पर हसरत ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपना सारा ध्यान स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने पर केंद्रित किया। उन्होंने दूर–दूर की यात्रा की और दुर्गम क्षेत्रों में स्वदेशी स्टोर स्थापित किए। उन्होंने टोंक जो राजस्थान के छोटा सा और पिछड़ा शहर है में स्वदेशी स्टोर की स्थापना की।

सय्यद तैयब मोहम्मद टोंकी कहते हैं ''मैं मेरे मामा ने टोंक में स्वदेशी दुकान खोली, मैंने देसी शब्द सुना था, विदेशी सुना था, स्वदेशी पहली बार सुना। मैंने बुजुर्गों से स्वदेशी के बारे में पूछा तो उन्होंने हसरत मोहानी का नाम

बताया अंग्रेजो के खिलाफ उनके संघर्ष का जिक्र किया और इन कहानियों को टोंक जैसे स्थान पर सुनाया गया जहां पायोनियर जैसे अखबार को पढ़ना भी एक दंडनीय अपराध था जिसे ना केवल अंग्रेज द्वारा संपादित किया गया था बल्कि सशस्त्र बलों से भी आपूर्ति और वितरण किया गया था। अब आप सोच सकते हैं कि हसरत के निश्चय ने ऐसी जगह स्वदेशी दुकान कैसे खोल दी?''[7]

हसरत का स्वदेशी और विदेशी बहिष्कार के संबंध में गांधीजी से मतभेद

1919 को प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की के खलिफा का पद समाप्त करने विरोध में भारत के मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू किया गया। 20 मार्च, 1919 को खिलाफत कमेटी का गठन किया गया जिसमे अली बंधु, मौलाना आजाद, हकिम अजमल खाँ, हसरत मोहानी आदि नेता सम्मिलित थें। 23 नवंबर, 1919 को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन का आयोजन किया गया। महात्मा गांधी को सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया।

महात्मा गांधी ने इसे हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ जोड़ने के स्वर्ण अवसर अवसर के रूप में देखा। इस अवसर पर उन्होंने स्वदेशी को अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का अनुरोध किया।

''हसरत जो शुरू से ही स्वदेशी और असहयोग के प्रचारक थे और अंग्रेजी माल के बायकाट की प्रेरणा देते थे, ने इस अवसर पर अपने प्रभावशाली भाषण में तीन बातों पर बल दिया और विशेषकर अंग्रेजी माल के बायकाट की समस्या पर अत्याधिक आग्रह किया परंतु गांधी जी उस समय इस बात के पक्ष में न थे। इसका उल्लेख करते हुए इंदुलाल यज्ञनीक लिखते हैं, ''महान उर्दू शायर और राजनीतिज्ञ मौलाना हसरत मोहानी ने.... यथासंभव ब्रिटिश माल का बायकाट का प्रस्ताव प्रस्तुत किया, किंतु गांधीजी उसके विरोध में बोले।''[8] हसरत ने अपनी बातों को इतनी सहजता से पेश किया की ''असहयोग का प्रस्ताव खिलाफत कांग्रेस में स्वीकृत हो गया।

स्वदेशी अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के संबंध में गांधीजी और हसरत मोहानी के विचार परस्पर भिन्न थे। एक ओर जहाँ गांधीजी अहिंसक मार्ग पर चलते हुए स्वदेशी को अपनाने और बहिष्कार के पक्ष में थे वही दूसरी और हसरत जरूरत पड़ने पर हिंसक मार्ग अपनाने के पक्षधर थे। गाँधीजी स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को आर्थिक स्वतंत्रता के रूप में प्रतिपादित करते थे। कुटीर उद्योगों पर बल देते हुए उन्होंने चरखा और खादी को स्वदेशी का प्रतीक माना वो विदेशी श्रम के साथ विदेशी वित्त से निर्मित वस्तुओं को विदेशी मानते थे। इसके विपरित हसरत भारत मे निर्मित–भारतीय श्रम और सामग्री से उत्पादित सामान को स्वदेशी मानते है चाहे उसके निर्माण में विदेशी वित्त का उपयोग किया गया हो। उन्होंने भारतीय श्रम पर बल दिया और भारतीय मिलों को चरखे के समान स्वदेशी माना। कुछ बातों में प्रासंगिक व वैचारिक भेदभाव के बावजूद उन्हें गाँधीजी से प्रेम और लगाव था। उनकी भविष्यवाणी सत्य हो इसलिए वह स्वराज्य की घोषणा की तिथि पहली जनवरी 1922 निश्चित करना चाहते थे और उनकी धोषणा भी उन्हीं से कराना चाहते थे।[10]

निष्कर्ष

भारत में स्वदेशी को लोकप्रिय बनाने में हसरत मोहानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वदेशी आंदोलन में जितना महत्वपूर्ण स्थान गांधी जी का है उतना ही हसरत मोहानी का भी है। गांधी जी ने स्वयं अपनी आत्मकथा में हसरत के स्वदेशी के प्रति प्रेम का जिक्र करते हुए कहा है कि उन्हें स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ करने के लिए हसरत मोहानी से प्रेरणा मिली। हसरत स्वदेशी प्रचार के साथ विदेशी बहिष्कार के भी समर्थक थे। उनका विचार था कि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाना चाहिए, किंतु वे भारत में बनी वस्तुओं को विदेशी नहीं मानते थे। उन्होंने मशीनों का विरोध नहीं किया। वह खादी के समर्थक नहीं थे। उनका विचार था कि अगर उद्योगों का विरोध किया गया तो बहुत बड़ी संख्या में मजदूर, कामगार बेरोजगार हो जाएंगे। हसरत मोहानी के विचार प्रगतिवादी थे। वे गरीबों मजदूरों के नेता थे।

संदर्भ सूची

1. मोहानी, हसरत (2007) अपनी जुबान, एन.सी.ई.आर.टी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली पृ. 85।

2. हसवी, ए. (1993) स्वदेशी आंदोलन और हसरत मोहानी, पृ. 52, 53।
3. मोहानी, हसरत (1907) *उर्दू–ए–मुअल्ला, अलीगढ़,* एहसास–उल–मताबी, अगस्त 1907, पृ. 17।
4. वही, पृ. 18,19।
5. वही, पृ. 20.।
6. मोहानी, हसरत (1909) *उर्दू–ए–मुअल्ला, अलीगढ़,* उर्दू प्रेस, अलीगढ़, नवंबर 1909, पृ. 23।
7. तैयब, एस.एम. टोंक (1965) *याद–ए–राफ्तागान,* मदीना, बिजनौर, 25 जनवरी 1965, पृ. 3।
8. हबीब, खां एम., (1997) *भारतीय साहित्य के निर्माताः हसरत मोहानी,* सहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, पृ. 39।
9. यज्ञनीक, आई, (1943) *गांधी मेरी निगाह में,* रविद्र भवन, फीरोजशाह रोड नयी दिल्ली, पृ. 114।
10. हबीब, खां एम., (1997) *भारतीय साहित्य के निर्माताः हसरत मोहानी,* सहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, पृ. 48।

****